अंतरा-शब्दशक्ति

अजनबी अंतर्नाद

कथा संग्रह

प्रीति हर्ष

अजनबी अंतर्नाद

(कथा संग्रह)

प्रीति दुबे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-80-3

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ - प्रीति दुबे

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- प्रीति दुबे, नागपुर (महाराष्ट्र)

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Ajanabi Artranaad by Preeti Dubey

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

प्रस्तुत संकलन मेरे ज्येष्ठ पुत्र हर्ष को सप्रेम समर्पित।

हर्ष

ईश्वर की वह कृति जिसने मुझे एक बेहतर माँ और एक बेहतर व्यक्ति बनने में हमेशा अग्रसर किया ।

"अजनबी अंतर्नाद"

एक बौद्धिक रचना कृति,
जो हमारे परिवेश को सूक्ष्मता व मानवीय संवेदना की दृष्टि से चित्रित करती है।

अनुक्रमणिका

1.	धक्के वाला बूढ़ा	5
2.	मरे हुए लोग आते नहीं हैं	7
3.	चुटकी भर संदेश	8
4.	तमाशबीन	10
5.	जीवन गणित	11
6.	ईश्वर	12
7.	प्यार! वो क्या होता है?	14
8.	काली का अधिकार	16
9.	आह्लाद सागर	18
10.	समारोह	19
11.	आई	21
12.	मेरे पराए मेरे अपने	23
13.	लेफ्ट-राइट-लेफ्ट	26
14.	मेरे हिस्से की धूप	28
15.	मैडम और मारु	30

धक्के वाला बूढ़ा

रंगन दो दिन पहले ही अपने टेकड़ी वाले नए घर में रहने आए। शहर से लगा सुंदर रिहायशी इलाका, आस-पास बड़े-बड़े घर, सुंदर सड़कें, रंगन रोज सुबह ऑफिस जाते समय देखते की यहां आस-पास सब कुछ बहुत अच्छा है, लेकिन घर के पास ही फुटपाथ पर चंपा के पेड़ की हल्की सी छांव के नीचे, दीवार से लगा एक काला सा बुढा बैठा रहता, दोपहर, शाम, धूप छांव, शायद वही उसका घर था। मौसम बदलते लेकिन बूढ़ा हर दिन वहीं दिखता। एक दिन रास्ते से जाते हुए रंगन की कार चढ़ाई के पहले ही बंद पड़ गई, आसपास कोई भी नहीं दिख रहा था इसी परेशानी में अचानक किसी ने पीछे से कहा- "क्या बात है साहब, क्या हो गया"-पलट कर देखा तो वही बूढ़ा। रंगन ने कहा लगता है- गाड़ी खराब हो गई है, आगे गैराज तक ले जाना पड़ेगा। बूढ़े ने कहा-"मैं गाड़ी को धक्का दूंगा।" रंगन ने कहा-आप से नहीं होगा। नहीं! साहब सिर्फ बीस रुपये दे देना, कुछ खा लूंगा, आज सुबह से कुछ भी नहीं खाया। रंगन ने उसे देखा-उस की झुकी हुई कमर, घुटने तक मटमैले रंग का पैजामा, जो कि नीचे से मुड़ा हुआ, जिसे कमर पर रस्सी से ऐठ कर पहना गया है, ऊपर मटमैली सी कमीज, जिसका सिर्फ ऊपर का एक बटन लगा हुआ, छाती आगे की ओर निकली हुई, सीधा हाथ पीछे कमर पर रखे हुए, सामने के कुछ दांत भी टूटे हुए, चेहरे पर सदियों की झुर्रियां, पीली आंखें, रंगन ने कहा नहीं।

बूढ़े ने कहा -"साहब मेरा नाम गनपत है, मैं धक्केवाला हूँ यहीं किनारे पर बैठा रहता हूँ, लोगों का हाथ रिक्शा, साइकिल, गाड़ी, चढ़ाने में मदद करता हूँ, तो लोग मुझे दो- चार रुपए दे देते हैं, उसी से कुछ खाता हूँ, बूढ़ा हो गया हु, काम नहीं कर सकता। रंगन ने थोड़ी देर सोचते हुए हामी भर दी। गाड़ी किसी तरह गैराज तक पहुंच गई, रंगन ने बीस रुपये दिए, फिर क्या था, बूढ़ा खुशी से हाथ जोड़कर मुस्कुराने लगा। अब तो आते-जाते बूढ़ा माथे पर हाथ रख कर सलाम करता, जैसे उसकी बहुत पुरानी पहचान है,

कभी-कभी रंगने उसे चाय के पैसे भी दे देता। त्यौहार आया तो रंगन ने घर से लाकर कुछ मिठाइयां दी, उसने कहा साहब कुछ रुपए दे दो, ज्यादा नहीं तो पाँच रुपये ही दे दो, रंगन ने उसे दस रुपय दे दिए, उसने कहा- तुम खाली पैर चलते हो, क्या, मैं तुम्हें पुरानी चप्पल दूं, आप उसे पहनोगे। उसने कहा- हां, चप्पल, जूते जो हैं, आप मुझे दे दीजिए, लेकिन यह क्या??? बूढ़ा तो फिर भी नंगे पैर ही दिखता ।

रविवार सुबह रंगन ने जैसे ही अखबार खोला, एक जगह उसे बूढ़े की तस्वीर दिखी, देखकर वह कुछ सोचने लगा, झटपट तैयार होकर रंगन एक छोटा सा गुलदस्ता, पेपर का वो टुकड़ा, लेकर उसके पास पहुंच गए, उससे कहा- काका यह देखो -आज के अखबार में आपकी तस्वीर छपी है, यह फूलों का गुलदस्ता रख लो, बहुत अच्छी बात है। बूढ़े ने कहा-साहब! मैं इस फूलों का क्या करूंगा? मुझे तो कुछ खाने के लिए पैसे दे दीजिए। कल से भूखा हूँ, रंगन ने कहा- वहां पास में गुमटी में चलिए, वहां कुछ है तो मैं आपको खिला देता हूँ । बूढ़े ने कहा-नहीं-नहीं साहब! मैं खुद ही खरीद लूंगा, बस आप मुझे कुछ पैसे दे दीजिए। रंगन ने कहा ठीक है, आप जरूर इनसे खाना ही खाना । पैसे देकर रंगान आगे बढ़े ही था कि उसके पास एक छोटा बच्चा दौड़ता हुआ जिसने उसकी दी हुई चप्पल पहन रखी थी, उसने कहा- अजोबा!! आई ने कहा है-"अब तक जो पैसे मिले हैं उसे दे दीजिए भाजी खरीदनी है। बच्चे के जाने के बाद रंगन ने पूछा-यह क्या है? बूढ़े ने कहा-साहब मजबूरी है, बेटा गुजर गया है, ये मेरा पोता है, अगर यह काम भी नहीं करूंगा तो मुझे खाने को कुछ नहीं मिलेगा। कमजोर हो गया हूँ, काम पर रोज नहीं जा सकता, बहु कहती है-बहुत महंगाई है, इतने लोगों का पेट कैसे भरेगा? तुम्हारा बेटा तो रहा नहीं और पोते कमाने के लायक नहीं। जिंदा रहना है तो कमाना तो पड़ेगा।

मरे हुए लोग आते नहीं हैं

खचाखच भरा हुआ बाजार, समोसे, जलेबी, कपड़े, सजावटी फूल, हस्तकला, सब कुछ खरीद लेने का मन, मैं घूम ही रहा था की चाय पीने के लिए ठेले पर आ गया। अभी दो घूंट ही पिया था कि पास की नाली में अचानक एक कंकाल नुमा लड़के को झुककर हाथ से पानी पीते देखा, दिमाग कैसे सुन्न पड़ गया, ऊबकाई सी आने लगी, इतने में लोगों का शोर बढ़ गया। पागल आ गया इसे भगाओ। किसी ने तब तक उसे पत्थर भी मार दिया। उसके माथे से खून बह चला । पानी पी कर वो जैसे ही घूमा, लोग कहने लगे लगता है पास के पागलखाने से भाग कर आया है। मैंने देखा शायद वह प्रेत ही था या वह सचमुच प्रेत ही था कह पाना कठिन शरीर कृष काय, गंदे बाल शायद कई महीनों से नहाया ही नहीं। शरीर पर कपड़े ना के बराबर, चेहरा भाव शून्य चारों ओर देखता हुआ वह बाल खुजला रहा था, इतने में किसी ने कहा-डंडे से मारकर भगाओ नहीं तो यह भीड़ में घुस जाएगा, देखो इसके शरीर से दुर्गंध आ रही है। इतने में वह हाथ पेट पर रख कर खड़ा हो गया कि लोग उसे डंडे से मारने लगे। वह जमीन पर गिर पड़ा, लेकिन फिर भी लोग उसे मारते रहे। साफ,उजले कपड़े पहने हुए लोग खुद को अमीर समझकर दूर हटने लगे।

वह जमीन पर अधमरा पड़ा रहा, लोगों ने कहा-यह सरकार भी कुछ नहीं करती, क्यों ऐसे लोगों को मार नहीं दिया जाता, आखिर इनका दुनिया में क्या काम है पागल कहीं का। मैं मूक दर्शक बना रहा, सब कुछ देखता रहा। इतने में मंदिर के सामने बैठा भिखारी एक गंदी सी थैली लेकर उसकी ओर आया, वह स्वयं भी किसी पागल से कम नहीं दिख रहा था, लोग हंसने लगे बोले एक पागल दूसरे पागल को बचाने आया है, पर उस भिखारी ने सुनकर भी अनसुना कर दिया। भिखारी ने उसका माथा पोछा और उसे उठने में मदद कर सड़क के किनारे बैठा दिया, फिर अपनी गंदी से थैली में से कुछ सूखी रोटी, बिस्किट के टुकड़े और एक, दो टूटे समोसे निकाले और उस पागल के आगे रख दिया, जिसे वह भाव शून्य हो कर खाने लगा। लोग चुपचाप देखते

रहे, अजीब सी चुप्पी, तभी किसी ने कहा -दोनों को यहां से हटाओ नहीं तो यह किसी पर हमला भी कर सकते हैं ।

भिखारी ने आसमान की ओर मुंह उठा कर कहा-"हे भगवान! वो बुलंदी भी किस काम की, जब इंसान चढ़े और इंसानियत उतर जाए।" भीड़ खाली होने लगी। शायद इसीलिए कहते हैं- कि मरे हुए लोग आते नहीं हैं।

चुटकी भर संदेश

मातृभाव विशेष शाला में आज वार्षिकोत्सव है, और सुजाता को आज वहां मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाया गया है कल से सुजाता इस कशमकश में थी कि इस बार तो मैं चली जाऊंगी लेकिन भविष्य में ऐसा प्रस्ताव कभी भी स्वीकार नहीं करूंगी, आखिर मैं इतना पढ़ लिखकर ऐसे कार्यक्रमों का हिस्सा क्यों बनूं? ऐसे बच्चों में शामिल क्यों होऊ, जो कुछ समझ ही नहीं सकते फिर भी मन को समझाते हुए उसने तय किया कि मुझे वहां पर क्या बोलना है? इससे पहले भी उसे इस स्कूल से कई कार्यक्रमों में शरीक होने का प्रस्ताव मिला था, पर हर बार वह पीछे हट जाती थी और इस बार भी उसे बड़ी दुविधा हो रही है। सुजाता समय पर अपनी गाड़ी से शाला पहुंच जाती है। आसपास अलग -अलग तरीके के बच्चों को देखकर उसे बहुत अच्छा नहीं लग रहा है। कुछ बच्चे चिल्ला रहे हैं, कुछ मुंह से थूक गिरा रहे हैं, कुछ को उनके साथ स्कूल के लोग या उनके माता-पिता संभाल रहे हैं, देखने के लिए पूरा हॉल भरा हुआ है, लेकिन बच्चों की स्थिति देखकर उसे बहुत अच्छा नहीं लग रहा है। कार्यक्रम शुरू होता है और घोषणा होती है कि इस तरह के कार्यक्रम समाज में जागरूकता लाने में सहयोग देते हैं। लोगों को यह समझना चाहिए कि ऐसे बच्चों को दया नहीं समाज में आगे आने के लिए सहारे की जरूरत है, लोग उन्हें भी ईश्वर की कृति समझकर सम्मान दें। सभी लोग अपनी ओर से ऐसे बच्चों के लिए छोटी-छोटी कोशिश द्वारा उनकी मदद भी कर सकते हैं, आए हुए सभी लोगों को यह बताया जाता है कि कोई भी

व्यक्ति अपने या अपने आसपास के लोगों को इस तरीके के सहयोग के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। जिसमें यहां पर पढ़ने वाले बच्चों के लिए स्कूल बस की साल भर की फीस दे सकता है, उनके साल भर का ट्यूशन फीस दे सकता है, स्कूल में उनके लिए कोई वर्कशॉप के लिए मदद कर सकता है, यह एक नेक कार्य है। कार्यक्रम शुरू होता है सभी बच्चे अपने शिक्षकों के साथ मिलकर कई कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और सुजाता को कुछ देर में यह सब अच्छा लगने लगता है, वह जो सोच कर घर से आई थी और यहां पर जो उसे देखने को मिल रहा है वह उससे बहुत अच्छा है, शायद उसने कभी ऐसा अच्छा कार्यक्रम देख पाने की उम्मीद नहीं की थी। मन ही मन उसे अपने निर्णय पर खुशी हो रही थी। उसे लगा कि मैं समाज सेवा कर रही हूँ, उसने बच्चों के बनाए हस्तकला, रजिस्टर बुक बाइंडिंग, फिनाइल, अगरबत्ती, सजावटी सामान भी देखा। एक काउंटर पर लोगों द्वारा मदद देने के बारे में जानकारी दी जा रही थी जिसमें इच्छुकगण बच्चों को आर्थिक मदद देने का फॉर्म भर रहे थे। यह भी बताया जा रहा था कि यह मदद देने पर आप को सरकार से टैक्स में छूट भी मिलती है। कई लोग आगे बढ़कर रुचि दिखा रहे थे। सुजाता ने भी एक हजार रुपए दिए उसे खुद पर गर्व हो रहा था। सुजाता को उपहार में बच्चों द्वारा बनाए गए सामान दिया गया जिसमें बच्चों की कला कौशल काफी खूबसूरत रूप में दिख रही थी। वह काफी खुश थी। इतने में स्कूल में निर्माण कार्य में काम करने वाली एक महिला अंदर आई और कुछ ही दूरी पर वह अपनी साड़ी हाथ में लपेटे हुए मुंह पर हाथ रख कर खड़ी हो गई सकुचाते हुए आगे बढ़ी और धीरे से कहा-मैं यह एक हजार रुपए देना चाहती हूँ, टेबल पर बैठे व्यक्ति ने प्रश्न सूचक नजरों से उसकी ओर देखा? तो वह बोली साहब- मेरी यह एक सप्ताह की कमाई है जो मैं इन बच्चों को देना चाहती हूँ और रुपए मेज पर रख कर वह बाहर चली गई। सुजाता की नजरें ग्लानि से झुक गईं। वह स्वयं को बहुत छोटा समझ रही थी, कार्यक्रम का अंतिम पड़ाव था सुजाता ने उस महिला को स्टेज पर बुलवाया और नाम पूछा, उसने कहा-- काशीबाई। सुजाता ने अपनी शॉल काशीबाई को ओढाते हुए उसे झुक कर प्रणाम किया।

तमाशबीन

सड़क के किनारे झाड़ियों में पड़ी वह खून से सने चिथड़े से अपने जिस्म को छुपाती, बिखरे बाल, नीले होंठ, नोचा हुआ शरीर और चेहरे पर श्मशान सा सन्नाटा, बीती रात के उन पर पिशाचों की ओर इशारा कर रही थी, जो कतई आमंत्रित नहीं थी, लेकिन उसके मजरूह की कराह से मीलों दूर, तमाशबीन भीड़ के कौतूहल का सबब जरूर थी । नज़रफरोश भीड़ उसके जिस्म के हर हिस्से का मुआयना करती, कहीं से कुछ दिख जाए। क्या हुआ? सिर्फ यह जानना है। किसी को उसके तार-तार हुई इज्जत से कोई वास्ता न था। तस्वीरें खींचते हुए लोग शायद बीती रात कुछ कसर रह गई थी। वह जख्मी औरत उन चीथड़ों को ही कुत्सित नजरों का ढाल बनाकर बैठी रही, लेकिन वह जानती थी कि फरियाद व्यर्थ है। मखौल उड़ाते लोगों की आत्मा मर चुकी है। वह कातिल भी हैं, गवाह भी हैं, अदालत भी, नतीजा सिर्फ मर्दों द्वारा मसली गई औरत, जो अपनी लहूलुहान इज्जत को ढकने की व्यर्थ कोशिश कर रही है। अजीब सी चुप्पी, लोग किंकर्तव्यविमूढ़ देख रहे थे, कह पाना कठिन है कि लज्जाहीन कौन है???

सिर्फ इंसानियत शर्मसार सर झुकाए बैठी है सरे बाज़ार। यह वह भीड़ थी जिस से बदहजमी कभी नहीं होती और वह अपना दस्तूर बखूबी निभा रही है। सदियों से यही तो होता आया है, द्रौपदी हर चौराहे पर मिल जाती है। यह इब्तिदा नहीं, अंजाम नहीं, मगर तरक्की भी नहीं, फिर भी उन्हें अपने इंसान होने का फख्र है। भीड़ बढ़ चली। नेता, समाजसेवी, पत्रकार, गांधारी भीड़, मरी हुई आत्माओं वाले जिंदा लोग, सब चर्चा में व्यस्त। क्या औरत ही अभिशप्त है यह सब सहने को?? वहशी दरिंदे जिन्होंने हमेशा औरत को कुचला, रौंदा, नष्ट कर दिया, क्या कोई युग पुरुष नहीं???

जीवन गणित

उषा आज कई दिनों बाद काम पर आई, आते ही कारण पूछने पर कहने लगी, आज मुझे कुछ मत बोलो दीदी "आज मैं बहुत खुश हूँ "मेरे आश्चर्य की सीमा ना रही "मैंने कहा तुम्हारा तो एक्सीडेंट हो गया था, किसी गाड़ी वाले ने धक्का मार दिया था, फिर भला इसमें क्या खुशी?

उषा कहने लगी-" दीदी कई साल पहले मैं उस बड़े सफेद बंगले पर काम करती थी, उस समय तीन लड़की के बाद मेरा एक लड़का भी हुआ था, इतना सुंदर कि काम पर ले जाती तो मालकिन कहती तुम्हारा बेटा राजकुमार सा लगता है, प्यार से उसे मैं बच्चू कहती, हँसाने के लिए मैं उसे हवा में उछालती और उसकी हंसी में खुद को खो देती । एक दिन अचानक उसे तेज बुखार आया, उस की पसली चलने लगी, मेरे पास घर में रूपये भी नहीं थे, डॉक्टर की फीस कहां से देती, भागती हुई सफेद बंगले वाली मालकिन के घर गई और उनके पैरों पर गिर पड़ी, सेठानी बोली" आई है तो काम करती जा उसके बाद ही पैसे दूंगी।" मैंने उनसे बोला दवा खाने से लौटकर आपका काम कर दूंगी, तो उन्होंने बोला फिर तो तू नहीं आएगी, ऐसी तुम्हारी कहानियां चलती रहती हैं, मजबूरी थी सो जल्दी जल्दी काम निपटा कर पैसे ले घर की ओर दौड़ते हुए पहुंची लेकिन तब तक देर हो चुकी थी, मेरा लड़का मर चुका था। दारूबाज पति था उससे भी पैसे छिपाकर चावल के डब्बे में पैसे रखती। तीन -तीन लड़कियां थी, अब उनका मुंह देख कर जीना मजबूरी थी, आधा पेट खाकर भी जिंदा रहना था। कुछ समय बाद पति भी छोड़ कर भाग गया। बहुत समय हो गया तो विधवा का जीवन जीने लगी। मैंने कहा-" तुम मुझे यह सब क्यों बता रही हो।" उषा बोली दीदी- आज मुझे कह लेने दो; कभी किसी से मैंने नहीं कहा, बहुत दुख सहा है, कच्चे से मकान में रहती इतने पैसे नहीं थे कि घर भी बना पाती। जमाने ने मुझको इतना धोखा दिया और गरीबी ने मुझे हर समय यह बताया कि हम गरीब लोग शायद इंसान ही नहीं होते।उस दिन जब काम से वापस जा रही थी तो

एक बड़ी सी गाड़ी वाले ने मुझे धक्का मारा और मैं गिर पड़ी, चोट तो थोड़ी सी ही लगी थी पर आदमी मालदार दिख रहा था सो मैंने एक उपाय सोचा दवा पानी के नाम पर, पुलिस का भय दिखाते हुए उससे मैंने अच्छी मोटी रकम मांगी, उसने बिना ना कि मुझे वो रुपए भी दिए, फिर मैंने बीपीएल का कार्ड लेकर दवा खाने में अपना मुफ्त इलाज करवाया। मैं तो एक- दो दिन में ही ठीक हो गई थी, फिर सरकार की निराधार योजना से जो पैसे मुझे 15 वर्षों से मिल रहे थे वह पैसे भी निकाल कर इकट्ठे किए, राशन कार्ड से मिलने वाले केरोसिन को दुकान में बेचती थी, उससे मिलने वाले पैसे, ऐसे सारे पैसों को जोड़कर मैंने एक छोटा सा अपना कमरा बना लिया। हां, मैं कह सकती हूँ कि अब मेरे पास घर है। कल पूजा रखी है दीदी हाथ जोड़कर आपको उसमें बुलाती हूँ। गाड़ी वाला तो जैसे मेरे लिए भगवान बन कर आया था नहीं तो मैं अभी अपना घर नहीं बना पाती, मजबूरी इंसान को खा जाती है। टीवी आदमी के खत्म होने का फैसला वक्त नहीं करता हालात नहीं करते वह खुद करता है। मुझे खत्म नहीं होना, मैंने अपने बचाव का रास्ता सीख लिया है, मैंने जीवन गणित सीख लिया है, उषा मुस्कुरा रही थी।

ईश्वर

रीनी झील के किनारे बैठकर अपने बेटे अश के साथ मछलियां पकड़ रही थी। अश बार-बार मछली का कांटा डालता और नाकाम कोशिश करता। काफी देर हो गई थी लेकिन कोई भी मछली ना फंसी। अश फिर भी खेलता रहा,बार-बार कांटा डालता और खुश होता है । अचानक ऐसा लगा कि मछली फंस गई, निकालने पर देखा एक छोटी सी मछली कांटे में फंसी है अश बहुत खुश हो गया, उसने अंजली में पानी भर कर मछली को रख लिया और उसे देखने लगा। उसका हिलना-डुलना अश के चेहरे पर मुस्कान ला रहा था। कुछ देर बाद अश ने उसे वापस झील में छोड़ दिया। उसके चेहरे की संतोषजनक मुस्कान बता रही थी कि उसी समय दुनिया में कहीं जरूर करोड़ों

फूल एक साथ खिल उठे होंगे। रीनी सोचने लगी जब अश का जन्म हुआ था तो वह मां बन कर बहुत खुश थी, लेकिन वह यह नहीं जानती थी कि प्रकृति उसके साथ क्रूर उपहास कर चुकी है ।अश सामान्य बच्चों से अलग था,वह ईश्वर की विशेष कृति था जिसे ईश्वर ने बड़ी जिम्मेदारी के साथ सौंपा था ।तय नहीं कर पा रही थी कि मैं खुश हूँ या दुखी। अश तीन साल तक बोलना, चलना, बैठना अच्छे से नहीं कर पाता था। हर काम के लिए मेरे चेहरे की ओर देखता और मैं लाचार, बेबस, चाह कर भी उसकी वह मदद नहीं कर पाती थी, जो एक मां करना चाहती है। फिर भी दिन -रात की कड़ी मेहनत आखिर रंग लाई। एक दिन अचानक सुबह अश ने कहा -"मां "। उस दिन सालों बाद रीनी फिर से बहुत खुश थी। शायद मेहनत का पहला फल मिला था, लेकिन मां की चिंता और माँओ से अलग थी। बार-बार ईश्वर की कृति का अपमान होता, लोग हंसते, रीनी के दिल के टुकड़े हो जाते, पर वह अपने काम को पूरे धैर्य से करती रही। धीरे-धीरे अश छोटी-छोटी चीजें सीखने लगा। स्पेशल स्कूल जाने लगा और वह दिन भी आया जब आज दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम आया। अश का प्यार रीनी को सातवें आसमान पर ले गया । जीवन चलता रहा। छोटी-छोटी खुशियां मिलतीं और यही खुशियां रीनी के जीवन की बहुत बड़ी खुशियों में बदली । आज अश पच्चीस वर्ष का है, जिसके लिए उसकी पूरी दुनिया उसकी मां है । रीनी ईश्वर द्वारा दिए गए इस उपहार के लिए चुनी गई,यह सोचकर वह बहुत खुश है क्योंकि अब वह जानती है कि ईश्वर सिर्फ वहीं हैं जहां प्रेम, स्नेह, सेवा और सहानुभूति है, उसे ढूंढने के लिए प्रयत्न नहीं करना चाहिए। सिर्फ उसका अनुभव करना चाहिए ।

प्यार! वो क्या होता है?

हेमंत के इंजीनियरिंग का अंतिम वर्ष था । बस कॉलेज खत्म होने के लिए कुछ महीनों का समय बाकी था ।हेमंत मस्ती से अपना जीवन जी रहा था। खुश रहना, कई लड़कियों को दोस्त बनाना, उनके साथ घूमना-फिरना, मौज-मस्ती, उसके लिए यह जीवन का बहुत अच्छा समय था। माता-पिता, दोस्त सभी उससे टोकते, लेकिन जीवन और रिश्तो को लेकर हेमंत कभी भी संजीदा नहीं हुआ। उसके लिए तो सब कुछ एक खेल जैसा था ।इसे ही वह अपनी शान समझता। कॉलेज पूरा होते-होते नौकरियों के प्रस्ताव आने लगे। हेमंत को अच्छी सी नौकरी भी मिल गई ।अब तो माता-पिता उसे शादी के लिए कहने लगे। वह कहता अभी इतनी जल्दी नहीं, कुछ दिन और जीवन बेफिक्री से जी लेने दो। ब्रांडेड कपड़े, पहनना गाड़ी में घूमना, होटल में खाना खाना, नई-नई लड़कियों को दोस्त बनाना, कुछ भी तो नहीं बदला और जो समय बचता उसमें सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर चैटिंग में गुजार देता।

इसी दौरान फेसबुक पर उसकी दोस्ती प्रियंका से हुई। प्रोफाइल देख कर वह बहुत प्रभावित हो गया । नई-नई फोटो भेजना, बातें, कमेंट्स, यह रोज की बात हो गई। सवेरे उठते ही उसे संदेश मिल जाता। धीरे-धीरे दोस्ती बढ़ने लगी। हर छोटी-बड़ी बात वह प्रियंका से बताता। प्रियंका भी उसकी बातों को बहुत ध्यान से सुनती। धीरे-धीरे यह दोस्ती कब प्यार में बदल गई हेमंत को पता ही न चला। बस उसे तो प्रियंका से मिलने की इच्छा थी । फोटो देखकर वह यह सोचता कि नाम तो प्रियंका है, लेकिन किसी हीरोइन से कम भी नहीं । प्रियंका ने बताया वह भी किसी मल्टीनेशनल कंपनी में बहुत बड़े पद पर काम करती है ।अब तो हेमंत को लगा जैसे उसे जीवन भर के लिए सही लड़की मिल गई है और वह उससे शादी भी कर सकता है उसे सच्चा प्यार हो गया है।सपने उड़ान भरने लगे।

हेमंत ने प्रियंका से अपने मन की बात बताई। प्रियंका से अब तो खूब बातें होतीं। बातों ही बातों में एक दिन हेमंत ने प्रियंका के सामने शादी का प्रस्ताव भी रख दिया ।प्रियंका भी बहुत खुश हुई और हेमंत जैसे पति को पाकर वह अपने को बहुत किस्मत समझेगी, ऐसा विश्वास दिलाया। हेमंत की खुशी का ठिकाना न रहा। प्रियंका ने बताया कि वह पुणे में रहती है और बहुत ही जल्दी अपने कंपनी के किसी काम के सिलसिले में उसके शहर में आने वाली है, वहां पर वह हेमंत से मिलकर खूब बातें करना चाहती है। हेमंत के सपने सातवें आसमान पर उड़ने लगे। प्रियंका ने बताया कि वह एक दो दिन में ही उससे मुलाकात करने वाली है। हेमंत ने नए कपड़े खरीदे, प्रियंका के लिए भी उपहार लिया। लेकिन इसके बाद प्रियंका ने संदेश भेजा कि वह जरूरी मीटिंग की वजह से अभी नहीं आ पा रही है। इधर हेमंत मिलने को बेचैन हो रहा था । उसके लिए एक-एक दिन बीतना मुश्किल हो गया। उसने प्रियंका से पुनः शादी के बारे में बात की, तब प्रियंका ने बताया कि वह अपनी कंपनी से दो साल का करार कर चुकी है, इसलिए अभी वह नौकरी नहीं छोड़ सकती, यदि बीच में वह करार तोड़ती है तो उसे कंपनी को पांच लाख देने पड़ेंगे।

कहते हैं कि प्यार में आदमी अंधा हो जाता है, हेमंत का कुछ ऐसा ही हाल था। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था, क्या करें? फिर उसने प्रियंका से वादा किया कि वह उसके लिए पांच लाख का इंतजाम करने की कोशिश करेगा। प्रियंका मान जाती है हेमंत किसी तरह पाँच लाख रुपये का इंतजाम कर प्रियंका के बैंक खाते में भेज देता है। प्रियंका से पूना का पता भी मांगता है। इसके बाद से हेमंत को प्रियंका का कोई भी संदेश नहीं मिलता। उसे लगता है शायद प्रियंका शादी के बारे में सोच रही है। वह तय करता है कि वह प्रियंका से मिलने पुणे जाएगा। इस बीच हेमंत के पिता हेमंत को शादी के लिए बार-बार कहते हैं कि कोई लड़की अपनी पसंद की तुम देख लो। हेमंत कहता है मुझे ऑफिस के काम से पुणे आ जाना है और वह पुणे के लिए निकल पड़ता है।

हेमंत, रास्ते भर मन ही मन यह सोचता है कि प्रियंका से मिलकर वह क्या बोलेगा? उसे उपहार देगा,उसके साथ खाना खाने जाएगा,रास्ते भर उसकी आंखों में एक पल को भी नींद नहीं थी, बस जल्दी से पहुंचकर वह प्रियंका से मिलने उसके दिए पते पर पहुंच जाता है। लेकिन वहां पहुंचने पर उसे ऐसा कोई भी घर नहीं मिलता। पास की बनी बिल्डिंग के पास जाकर वह पूछताछ करता है तो पता चलता है, यहां आस- पास कोई प्रियंका नहीं रहती वह तुरंत अपने फेसबुक और मैसेंजर को चेक करता है, लेकिन वहां से भी अकाउंट बंद हो चुका था। हेमंत की आंखों के आगे अंधेरा छा गया, अब उसे समझ में आ रहा था कि वह ठग लिया गया है।

लुटा हुआ हेमंत दूसरे ही दिन घर पहुंच गया। पिता ने पूछा-"बेटा इतनी जल्दी काम हो गया क्या?" हेमंत इतना ही कह पाया- हां । पिता ने कहा एक, दो नए रिश्ते आए हैं तुम लड़की से मिल लो। हेमंत ने कहा- "पिताजी आप जिसे तय कर देंगे मैं उससे शादी कर लूंगा।"

काली का अधिकार

गुमना ने आज काली को महज पांच हज़ार रुपयों के लिए बूचड़खाने वाले नसरू को बेचने का फैसला कर लिया है। गुमना को पैसों की जरूरत है। खेती के लिए उसने जो कर्ज़ लिया था उसे भी चुकाना है । फसल तो कुछ खास अच्छी हुई नहीं, लेकिन कर्ज़ तो अदा करना होगा और उस पर से उसे उम्मीद से दो हजार ज्यादा मिल रहे थे। इधर काली बछड़े के जन्म के बाद से ही दूध भी कम देने लगी थी, बूढ़ी हो रही है ना, दस बार बछिया और बछड़े को जन्म जो दे चुकी है। काली अपने बछड़े की ओर गर्दन बढ़ाकर उसे लगातार चाट रही है, इस बात से अनजान कि अगले पल क्या होने वाला है? हाथ में पैसे आते ही गुमना ने काली को नसरू के हवाले कर दिया। काली अपने बछड़े

को चाटती जा रही है, पर आज उसे ना चाहते हुए भी जाना ही पड़ेगा!! नसरू पगहा खींचते हुए काली को मवेशियों से भरी गाड़ी में ठूंस देता है। क्या कहें? कि जानवरों की तरह! गाड़ी चल पड़ती है, रह-रहकर काली को अपने बछड़े की आवाज सुनाई देती, तड़प उठती, बेचैन हो उठती, उसने तो गुमना की संपदा हमेशा बढ़ाई ही थी गुमना भी गाहे ब गाहे तीज-त्यौहार पर उसकी पूजा करता, दूध-दही से घर भर दिया उसने, गुमना के बच्चे छोटे से बड़े हो गए। लेकिन फिर भी??? बूचड़खाने पहुंचते ही सभी मवेशियों को पहले से भरे बाड़े में घुसाया जाने लगा। भगदड़ सी मची हुई थी ।जानवर एक- दूसरे के ऊपर गिर रहे थे ।रह-रहकर लाठियों की बरसात हो जाती ।यह सब क्या है? एक दिन बीत गया, लेकिन काली अभी भी बाड़े में भूखी,प्यासी खड़ी है । हे भगवान !! मनुष्य लालच के वशीभूत किसी भी सीमा तक खतरनाक हो सकता है । मवेशी तो पृथ्वी पर आदिकाल से जीवन का आधार रहे हैं, तो उसे आज नफरत का हथियार क्यों बनाया जा रहा है? क्यों? धार्मिक आस्था और खाने की आजादी के टकराव की चक्की में पीस आ जा रहा है। एक-एक कर बाड़े के सभी मवेशी दिनभर काटे जा रहे हैं, आंखें निकाल कर फेंक दी गई, गर्दन पर कई- कई बार वार कर अलग किया जाने लगा। कंधे काट कर गिरा दिए गए । बस दिख रहा था तो केवल खून। खून ही खून!! खून की नदी में असहाय जानें, कराहते हुए, चिल्लाते हुए, लाचार, दिल को दहला देने वाला दृश्य, लेकिन सब कुछ चलता रहता है । मनुष्य के लिए खाने को इतनी चीजें हैं लेकिन मरना उस मूक को है। ये हत्या है। हां, ये हत्या ही है। पशु अधिकार दुनिया में दूसरा बड़ा मुद्दा है, पर क्या करें मानव ही हिंसक हो चला है तो न्याय कैसे होगा? यह चीखें कब लोगों के संवेदना को जगाएंगी। बस खड़ी-खड़ी अपनी बारी का इंतजार करती, हाय! क्या काली का कोई अधिकार है??

आह्लाद सागर

सत्तावन वर्षीय शुचिता अस्पताल में नवजात शिशु गहन कक्ष में हेड नर्स का काम संभालती हैं। अपने काम को वह हमेशा जिम्मेदारी के साथ पूरा करना और सेवा भाव के साथ समर्पित होकर अपने काम को पूरा करना ही उनकी पहचान है, इसलिए जहां भी उन्होंने काम किया उनके चाहने वालों की कहीं कोई कमी नहीं है। आज विभाग में नए डॉक्टर विश्वास बोस आने वाले हैं। सब कुछ बिल्कुल ठीक, सारी तैयारियां पूरी करने की जिम्मेदारी नर्स शुचिता के ऊपर ही है, वह सबसे बड़ी है, साथ ही अनुभवी भी,आते ही डॉक्टर विश्वास ने विभाग के सभी लोगों से मुलाकात की। नर्स शुचिता को ना जाने यह नाम कुछ सुना सा लग रहा है। नौकरी के इतने वर्षों में ऐसा पहले कभी-कभी ऐसा नहीं हुआ किंतु पहली बार ऐसा हुआ कि जब भी वह डॉक्टर विश्वास को अपने सामने देखतीं उन्हें लगता कि यह नाम हमेशा से वे जानती हैं, आखिरकार एक दिन हिम्मत जुटाकर उन्होंने डॉ विश्वास से पूछा कि वे कहां के रहने वाले हैं? उनके माता-पिता कहां के हैं? उनका जन्म कहां हुआ? डाक्टर विश्वास ने बताया कि तीस वर्ष पूर्व उनका जन्म राजापुर के सरकारी अस्पताल में हुआ था। नर्स शुचिता कुछ कहतीं उसके पहले ही डॉक्टर विश्वास बाहर चले गए। शुचिता सोच में पड़ गई । जल्दी अपनी ड्यूटी पूरी कर घर की ओर निकल पड़ी। उन्हें पूरी देर यह ख़याल आता रहा कि मैं सही सोच रही हूँ या नहीं। अगले चार-पांच दिन डॉक्टर विश्वास छुट्टी पर चले गए थे। नर्स शुचिता बेसब्री से उनके काम पर लौटने का इंतजार करने लगी। उन्हें यह पांच दिन बहुत लंबे लग रहे थे। पांच दिन बाद, उस दिन शुचिता काम पर समय से पहले ही पहुंच गईं लेकिन दिन भर डॉक्टर विश्वास नहीं आए । पूरे दिन वे काफी परेशान रहीं। डॉक्टर विश्वास के बारे में ही सोचती रहीं। जैसे ही उनकी ड्यूटी खत्म हुई, वह घर के लिए दुखी मन से निकल पडीं। कुछ ही कदम पर उन्हें डॉ विश्वास सारे विभाग के साथ खड़े हुए मिले। उनके हाथ में एक फोटो एल्बम थी, उन्होंने सभी के साथ नर्स शुचिता को भी हॉल में पहुंचने को कहा। डाक्टर विश्वास ने कहा आज मैं जो कह रहा हूँ यह शायद एक सपने के जैसा है। फिर एल्बम खोलकर

उन्होंने एक फोटो दिखाई जिसमें एक नर्स छोटे से बच्चे को गोद में लेकर मुस्कुरा रही हैं। नर्स शुचिता को तो जैसे अपनी आंखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। खुशी और आश्चर्य से उनकी आंखों से आंसू बह निकले। उन्हें सब कुछ सपना सा लग रहा था, तीस साल पहले जो बच्चा राजापुर के सरकारी अस्पताल में सात माह में ही जन्मा था और जिस के बचने की उम्मीद सभी ने छोड़ दी थी, उस समय युवा नर्स शुचिता की महीनों की देखभाल से उन्हें नया जीवन मिला था और वह स्वस्थ बालक के रूप में घर जा पाया वह बच्चा आज डॉक्टर विश्वास के रूप में उनकी आंखों के सामने खड़ा है। शुचिता ने कहा आज मैं अपने काम पर गर्व महसूस कर रही हूँ। यह वह खुशी है जो मैंने कभी सोचा ही नहीं था। डॉक्टर विश्वास ने कहा मैं समझ गया आपने मुझे मेरे नाम से पहले ही दिन कैसे पहचान लिया था? यह आपका काम के प्रति समर्पण पूजा तुल्य है। आज मैंने नर्स शुचिता के रूप में भगवान को देख लिया है।

समारोह

रेवती को जैसे ही यह संदेश मिला कि उसके पति कर्नल नरेश ने सीमा पर देश सेवा करते हुए ड्यूटी के दौरान तीन आतंकवादियों को मार गिराया है और इस मुठभेड़ में शहीद हो गए हैं। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। एक पल को ऐसे लगा जैसे दुनिया में कुछ बचा ही नहीं, कुछ देर बाद उसने आंसू पोंछ कर खुद को संभाला और निशा को अपनी बाहों में जकड़ लिया ।कर्नल नरेश का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया गया। जीवन धीमी गति से चलने लगा।

कुछ दिन बाद उसे एक सरकारी पत्र मिला जिसमें कर्नल नरेश को वीरता पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई है। दुखी मन से रेवती शहीद सम्मान समारोह में जाने की तैयारी करने लगी। जाने के पहले रेवती ने सोचा क्यों ना अपने पति की वर्दी में फोटो देखलूं जो उसके लैपटॉप पर है, उसने देखा कुछ नए मेल भी दिख रहे हैं उसने जैसे ही खोला तो उसे कर्नल नरेश द्वारा लिखा गया एक मेल मिला जो उन्होंने अपनी मृत्यु के कुछ देर पहले ही लिखा था।

प्रिय रेवती,

"यहां पर हालात बहुत नाजुक चल रहे हैं, कल का कोई भरोसा नहीं लेकिन देश की रक्षा के लिए मैं अंतिम सांस तक लड़ता रहूँगा। संभवतः जब तक तुम यह पत्र पढ़ोगी तब तक मैं इस दुनिया में ना रहूँ, मैं बताना चाहता हूँ कि मैं तुम सभी से बहुत प्यार करता हूँ और सदा करता रहूँगा। मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा, तुम्हारे दिलों में। ईश्वर हमेशा यह जानता है कि हमारे लिए क्या अच्छा है शायद जन्म के पूर्व से। यह सब भी किसी कारण से हो रहा है। शायद तुम इस समय मेरी बात पर विश्वास ना करो मैं यह बताना चाहता हूँ कि तुम मेरे लिए एक बेहतर पत्नी रही हो। पिछले कुछ वर्ष जो मैंने तुम्हारे साथ बिताए वह मेरे जीवन के बेहतरीन वर्ष रहे हैं । मैंने वह खुशनुमा जीवन जिया जो बहुत से लोग सपनों में सोचते हैं । मुझे गर्व है कि मैंने तुम्हें अपना जीवन साथी चुना। हमारी छोटी सी बेटी की याद जो हर बार मुझे मुस्कुराने को मजबूर कर देती है। मेरे जाने के बाद तुम जब भी दुखी होना उन पुरानी यादों में लौट जाना और फिर मेरी बेटी की ओर देखना वह कितनी मासूम है। उसे एक मजबूत लड़की बनाना। उसे हमेशा उसके पिता के बारे में बताना और यह भी बताना की उसके पिता ने उसे कम समय में दुनिया का सबसे ज्यादा प्यार दिया है, जिस दिन वह पैदा हुई वह मेरी जिंदगी का सबसे खूबसूरत दिन था, उस की पहली मुस्कान तुम्हारे द्वारा दिया सबसे बड़ा उपहार है, उसे बताना की उसके पिता अब स्वर्ग में रहते हैं और वहीं से तुम्हें देख रहे हैं। उसे मेरा प्यार देना। तुम जीवन में हमेशा खुश रहना, शायद तुम्हें इस समय असंभव लगे लेकिन मेरा विश्वास करना कि अच्छा समय जीवन में आगे आएगा। तुम्हारा और निशा का भविष्य सुखद हो।"

तुम्हारा पति,

कर्नल नरेश

रेवती की आंखों से आंसुओं की धारा फूट पड़ी। आंसू पोछकर उसने पुनः वह पत्र पढ़ा, गर्व से मस्तक ऊंचा कर जीवन में आगे बढ़ने का निर्णय लिया तथा शहीद सम्मान समारोह में जाने की तैयारी करने लगी । यह सोच कर उसे गर्व महसूस हो रहा था कि वह एक देशभक्त की पत्नी है जो अपनी मातृभूमि पर न्योछावर होकर भी सदा सदा के लिए अमर हो गया ।

आई

केशवा बच्चों की ओर चाय का गिलास रखते हुए बोल, आज मैं पाव और टोस दोनों लाई हूँ, जल्दी-जल्दी खा लो। चाय के गिलास को धक्का देते हुए बड़े बेटे चिंटू ने कहा-नई,मुझे तो दूध चाहिए, तुम रोज कहती हो कल लाऊंगी, आज मैं चाय नहीं पीऊंगा।

इतने में टिन का दरवाजा हिलता दिखा केशवा ने कहा-देखतो चिंटू ! दार पर कौन है? अरे कोई नई शेरू उसे भी टोस खाने को दे ना वो भी पूंछ हिला रहा है ।

केशवा-हे भगवान! हमें तो पूरा नईं पड़ता और एक ये है,जब देखो आकर खड़ा हो जाता है। ले, एक पाव का टुकड़ा फेंकती है । शेरू भी बैठकर पूँछ हिलाते हुए खाने लगता है ।

आई हमें भी आज थोड़ा दूध दो ना। राजू और गुड्डी भी बोलने लगे ।

केशवा- ये ले चिंटू, वीस रुपए मनीष सेठ की दुकान से दूध लेकर आ। केशवा तीनों को कटोरी में दूध देती है ।

राजू -आई तूने मुझे कम दूध दिया है। (और तीनो बच्चे झगड़ा करने लगते हैं, चिंटू का दूध जमीन पर फैल जाता है, ऊं ऊं ऊं आई)

केशवा-क्या रे !इसके लिए दूध मांगा था, कर दिया ना सत्यानाश । केशवा- (चिंटू और राजू दोनों को मारती है और अलग-अलग बैठा देती है) कल से दोनों झील पर पानी का पाउच और मीठे बेर बेचना, कुछ पैसे तो घर में आएंगे ।दिन भर खाली गल्ली मैं गोटिया खेलना और मारामारी येइच सीखा तुमने??

केशवा -चलो चलो उठो अंघोल कर के शाला जाओ ।

चिंटू -आई आज डब्बे में क्या है?

केशवा-पाव और आचार है। शाम को मैं तुमको अच्छा खाना लाकर देती, आज साहब के लड़के का वाढदिवस है, गए साल मिठाई और समोसे मिले थे, इस साल भी अच्छा खाने को मिलेगा ।

शाम को-आई खाने को दे क्या लेकर आई?

केशवा-नईं रे,कुछ भी नई लाई ।मैडम और साहब ने होटल में पार्टी दी, घर पर कुछ भी नईं,..

गुड्डी-तो क्या तूने खोटा बोला था?

केशवा-नईं रे!! अपना नसीब ही खराब है, नईं तो तुम्हारा बाप मेरे कु छोड़कर नईं जाता।

दार पर सावित्री- क्या रे केशवा!! दोन दिवस होने को आए तु दिसली नईं।

केशवा-बहुत काम था बंगले पर, टाइमच नईं मिला काकू ।आजुन सांगा काय म्हणते?

सावित्री-मैं क्या बोल रही थी कि जोशी साहिब चिंटू को गाड़ी धुने, पोसने के लिए बोलते हैं महीना चार सौ रुपए देंगे, एक दिन के आड़ में जाना है। उदया पाठवते का?

केशवा- हाव! बर, काकू ऐसे भी अकरा साल का हो गया है, दिन भर बस्ती के पोटटो के साथ फालतू घूमता रहता है, अभ्यास भी नहीं करता और उसको दूध बहुत पसंद, कम से कम दूध के पईशे तो कमा लेगा।

गोविंद -(खिलौने वाला) खिलौने लो खिलौने!

गुड्डी-आई ! बावली ले के देना ।

काका-मला बावली (गुड़िया) पाईजे।

केशवा-बावली कैसे दिए?

गोविंद-केश है क्या? तो वीस रुपए भी साथ में देना।

केशवा- (हात में झड़े हुए बालों का गुच्छा पिशवी में डाल कर लाती है) काका! ये पांच महीने के केस हैं और वीस रुपये । बावली गुड्डी को दे दो,उसके बाबा के जाने के बाद उसे मैं पहली बार खिलौने लेकर दे रई।

गोविंद- हे काय रे केशवा?? इतके केश??

केशवा-केश नाही काका, माझी गुड़िया जी बावली!!!

मेरे पराए मेरे अपने

बगल के फ्लैट में नया परिवार रहने आया था। सहसा हमारी नजरें मिली और मैं उसे देख मुस्कुराई, लेकिन उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी । जब भी वह दिखती मैं उसे देख कर मुस्कुराती पर उसके चेहरे पर कोई भाव ना होते । इस बीच मेरे बेटे का स्कूल खुल गया, बस स्टॉप पर छोड़ने गई तो देखा वह भी अपने बेटे के साथ वहां खड़ी हुई है, मैं फिर मुस्कुराई पर उसने कुछ ना कहा । घर में वापस घुसते समय मैं बड़ा अजीब महसूस कर रही थी । कैसी है? बिल्कुल मूर्ति ! ऐसा कुछ दिनों तक चला, एक दिन मेरे बेटे ने बताया कि पड़ोस में जो नया लड़का रहने आया है वह मुझसे एक साल छोटा है, वह स्कूल में भी अकेला खड़ा रहता है, किसी से बात नहीं करता। मैं अपने काम में व्यस्त हो गई। लेकिन अभी भी उसे देख कर मुस्कुराती, पता नहीं क्यों? उस दिन दरवाजे पर दस्तक हुई,मैंने देखा तो वह एक हिंदी की किताब लिए खड़ी है, मैंने कहा-हां-हां अंदर आइए; पर उसने कोई जवाब नहीं दिया, सिर्फ उंगली से एक अक्षर की ओर इशारा करते हुए उसने पूछा !! मैंने कहा- ' क्ष' और वह थैंक यू बोल कर चली गई । अगले दिन बस स्टॉप पर उसने मुझे 'गुड मॉर्निंग 'बोला। मैं बहुत खुश थी, आखिरकार उसने कुछ कहा तो, 'आई एम विद्या 'मैं -नेहा, तब मुझे लगा शायद वह हिंदी नहीं जानती। अब तो हर दिन वह कुछ ना कुछ पूछती, अपने बेटे को मेरे पास हिंदी की किताब लेकर भेजती। एक दिन मैंने उनसे कहा कि आप अनंत को मेरे पास भेज सकती हैं, दूसरे दिन से अनंत और विद्या दोनों ही मेरे पास आने लगे। जब तक अनंत पढता, तब तक विद्या मेरे पास ही रुकती, बहुत ध्यान से सुनती, मैं जो भी पढ़ाती, कुछ शब्द सीखने लगी थी। अब हमारे बच्चे साथ-साथ खेलते। वह मेरे साथ टेलीविजन देखती, फिल्में देखती और लगातार पूछती रहती। विद्या मदुरै से आई है, अभी उसने हिंदी की कुछ शब्द सीख लिए हैं, जाहिर है बाकी की बातें अंग्रेजी में ही होती। विद्या को तमिल भी आती थी। वह कहती भाषा

को लेकर उसे बड़ी मुश्किल हो रही है। उसके पति कुछ महीने बाद स्थानांतरण की पुनः कोशिश करेंगे। मैं पूरी मेहनत से अनंत को हिंदी सिखाने में जुट गई थी, अनंत के साथ विद्या भी हिंदी सीख रही थी। बस फिर क्या, वह काफी समय मेरे साथ बिताती। अनंत की परीक्षाओं के परिणाम आए, हिंदी में उसे काफी अच्छे अंक मिले थे, विद्या बहुत खुश थी और उसकी हिंदी भी। कुछ दिनों बाद मैंने उससे पूछा-क्या तुम्हारा स्थानांतरण हो रहा है? बोली नहीं फिर अगले पांच साल तक हम पड़ोसी रहे । हमारी दोस्ती अब एक परिवार का रूप ले चुकी थी। जब भी मुझे जरूरत होती,वह मेरी बहन की तरह मेरे पास मिलती। मेरी पूरी मदद करती, वह एक अच्छी महिला थी। इसी बीच मेरे पति ने बताया कि दीपावली की छुट्टियों में इस बार हम केरल घूमने जाएंगे, बहुत सुंदर जगह है। मैंने विद्या को यह बात बताई, विद्या ने कहा तुम जब भी केरल जाना तो मेरे घर मदुरै जरूर जाना। मैंने उसे हां कह दिया। हम दीपावली के दिन कोच्चि में थे,मन में दीपावली ना मनाने का दुख हो रहा था। काश मैं घर में होती। मेरे पति ने कहा चलो तुम्हें मंदिर ले चलते हैं, बडी मुश्किल से हमें दस किलोमीटर दूरी पर केवल एक ही मंदिर मिला।मंदिर जाकर मैं संतुष्टि थी। हमारी छुट्टियां अच्छी बीत रही थी। चाय के बागान, इलायची के जंगल, झरने, प्रकृति अपने सुंदरतम रूप में और मौसम खुशगवार। इसी बीच विद्या ने फोन करके मुझे बार-बार याद दिलाया कि कुछ भी हो मेरे घर जरूर जाना। मैं उसे टाल ना सकी। दूसरे दिन हम मदुरै के लिए निकल पड़े ।रास्ते में सोचती रही कि मैं उनसे क्या बातें करूंगी। घर पहुंचने पर विद्या की मां आरती की थाली लेकर आई। मुझे बड़ा अटपटा लगा। उनका पूरा परिवार हमारे आसपास इकट्ठा हो गया। उन्हें हिंदी तो नहीं आती थी, लेकिन उनके चेहरे की मुस्कुराहट में उनका प्रेम दिख रहा था। हमने साथ में खाना खाया। फिर विद्या के माता-पिता हमें हिल्स पर घुमाने लेकर गए, जंगल से उन्होंने मैंगोस्टीन नामक फल तोड़वाया। मैंने कभी पहले वह फल देखा नहीं था, बहुत ही मीठा फल बिल्कुल लीची के जैसा। नारियल का पानी पीया। मसालों के बागान में घूमे। विद्या के पिता ने कहा -नेहा ने जितना अपनापन और प्यार मुझे दिया है आप उसे आशीर्वाद देना, वो मेरी

बहन जैसी है। इसका श्रेय विद्या की टूटी-फूटी हिंदी को जाता है । विद्या के अनुसार हिंदी वह पुल है जिस पर से चढ़कर वह आपके घर तक पहुंच गई है। विद्या की मां ने मुझे साड़ी भेंट की । मैंने उन्हें मना करना चाहा पर उन्होंने हाथ जोड़कर मुझे निरुत्तर कर दिया । मन में ढेर सारा प्यार लेकर हम विदा हो गए । रास्ते भर मैं यह सोचती रही कि ये हिंदी भाषा ही है जिसने हमें प्रेम और अपनेपन की डोर से हमेशा के लिए एक सूत्र में बांध दिया है।

लेफ्ट-राइट-लेफ्ट

लक्ष्मी के लिए आज सुबह कुछ जल्दी ही हो गई । सुबह के चार ही बजे हैं। अगल -बगल के कमरों में सभी लोग सोए हुए हैं। सो वापस आकर बिस्तर पर बैठ गई। यही तो वह घर है जहां कभी वह सुबह से रात तक दौड़-दौड़ कर सारे काम करती थी । भोर में ही मां नहा कर मंत्रोच्चार करतीं। सूरज की पहली किरण के साथ घर और वातावरण सुगंधित हो उठता। सभी को चाय, दूध, नाश्ता देना, समय पर बड़ो की बात सुनना, कुछ बातों को नजर अंदाज कर अपने जीवन में वह चली जा रही थी। जिंदगी जैसे हिरण की तरह कुलाचे मार रही थी। मां पूजा पाठ करती, जिउतिया, हल षष्ठी नवरात्रि, दीपावली, सूर्य षष्ठी, घर जैसे त्योहारों के झूले में झूलता रहता। बच्चे चहकते रहते, कार्तिक स्नान मेला पूरे माह भर मां भोर में नदी पर नहाने जाती और सूर्योदय तक नहा कर सब वापस आ जाते। सुबह-सुबह रेडियो पर बचता भजन, सड़क बुहारती सफाई वाली, स्कूल के रिक्शे की घंटी, पेड़ पर चिड़ियों के चहकने की आवाजें, सिंदूरी अरुणोदय, बगीचे में फूल तोड़ती मां, पानी डालता माली, जिंदगी शायद इससे खूबसूरत हो ही नहीं सकती। कोई शिकायत नहीं। खुशी इतनी कि हर पल गुनगुनाने का दिल करता और आज बच्चे बड़े हो गए बड़ी-बड़ी नौकरियों में आ गए और जब हम कहते हैं कि देश हर वर्ष कुछ सेंटीमीटर दक्षिण में घट रहा है और हिमालय हर दिन ऊंचा होता जा रहा है, विज्ञान इसे गुरुत्वाकर्षण कहता है। सब कुछ उत्तर की ओर चुंबकीय शक्ति से खिंचता, शायद नई पीढ़ी भी इसीलिए धन

की ओर उत्तरमुखी हो चली है। बदलाव इस कदर है कि अब भीड़ में भी इंसान अकेला है। बेटे-बहु, पोते- पोती, नाती सब हैं पर समय किसी के पास नहीं। अब घर में मां के हाथ से तोड़ी बगीचे की वह सब्जी नहीं, वह गाय का शुद्ध दूध, दही, घी नहीं, वह अचार, पापड़ नहीं ।कमी तो किसी भी चीज की नहीं, फिर भी खालीपन है। छोटे बच्चे समय से पहले बड़े हो गए हैं। धन की जरूरतें अधिक हैं। हो भी क्यों ना? महंगाई जो बढ़ गई है, और यही जरूरतें इन्हीं बच्चों को अपने आप में निकल जाती हैं, साथ ही उनका बचपन भी। घड़ी की सुई अब दिन मैं लक्ष्मी के लिए सदियों का समय बताती है। गांव अभी खुले हुए हैं, लेकिन शहरी घर स्क्वायर फुट में। घर में कसरत से लेकर खून के दबाव तक जानने की सब मशीनें, विदेशी फल, जूस, खाना सब। जो बदल गया है वह है खुशी की परिभाषा। मन की पूरी बात भी बयां नहीं कर पाती ।आज मैं बेटे-बहू, बच्चों के साथ कुछ ज्यादा देर हंसना, बात करना चाहती हूँ। पहले अपने हर जन्मदिन पर मैं इतनी खुश रहती थी, अरविंद मेरे मन चाहे उपहार लाते, लगता था कि मैं कोई महारानी हूँ, लेकिन अब तो लगता है किसी के पास मेरे लिए समय ही नहीं..... काश! आज तो किसी को याद भी नहीं कि मेरा जन्मदिन है। दोपहर तक दुखी मन से बैठी रही। बेटे-बहु सब काम पर चले गए ।मन बिल्कुल उदास, अरविंद के बिना तो जैसे मेरी दुनिया ही खत्म हो गई है। तभी बेटी और दामाद मिलने आ गए। बस फिर क्या था सब्र का बांध टूट पड़ा। एक-एक बात बताया, बेटी कहने लगी मां इतना अपमान ठीक नहीं है, आप क्यों सहती है, अब आप यहां एक भी पल नहीं रहेंगी। आप तुरंत मेरे साथ चलिए, अब आप अपने नाती नातीनों के साथ रहिए । मैं आपका पूरा ध्यान रखूंगी। बस फिर क्या था, सामान बांध कर ज्यादा कुछ सोचे बिना बेटी के यहां चली आई। मन में रह रहकर पुरानी यादें टीस उठा देतीं। फिर भी अपने मन को दूसरी ओर लगाने की पूरी कोशिश करती। कल बेटी हेमा का जन्मदिन है, रात से ही मैंने तय कर लिया कि उसे कल उसकी पसंद के बेसन के लड्डू, मठरी, पुए वह सब बनाकर खिलाऊंगी जो वह बचपन में छिप-छिप कर खाती थी और जब मैं उससे कहती कि बेटा

खाना खा लो, तो कहती मां आज भूख नहीं है। बस जैसे ही हेमा ऑफिस के लिए निकली मैं किचन में लग गई । सब चीजें बनाईं और इंतजार करने लगी कि कब हेमा और बच्चे घर आ जाएँ और मैं सबको अपने हाथों से बना लड्डू खिलाऊँ। घंटी बजती, भागकर गेट पर गई, हेमा ने कहा मां बड़ी खुशबू आ रही है, क्या बनाया है? टेबल पर देखते ही समझ गई और खुश हुई। मैंने कहा तुम खा कर बताओ कैसे बने हैं। लेकिन हेमा ने कहा-मां! इतना मीठा कौन खाएगा? और यह मैदा यह तो जहर है, यह सब सेहत को नुकसान पहुंचाते हैं। मेरी खुशियां जैसे काफूर हो गईं। शायद अब बेटी और बहू का फर्क नहीं रहा। समझ नहीं पा रही थी कि मैं बहू के साथ दुखी थी या बेटी के साथ। मुझे लगा मेरी गलती है, बच्चे अब बड़े हो गए हैं मुझे एक बार हेमा से पूछ लेना था। क्या करूं? उम्र हो रही है ना। बच्चों पर अधिकार जमाना कभी -कभी अच्छा लगता है, लेकिन नहीं, मैं गलत हूँ। पता नहीं यह कैसी दुनिया है जहां मेरे अपने बच्चे भी मेरे मन की भाषा नहीं समझते। शायद मुझे अपने बच्चों के मन को समझते हुए उनके साथ चलने की कोशिश करनी चाहिए। मुझे समझना चाहिए बेटे-बहू सभी नौकरी पेशा हो गए हैं, उन्हें अपनी सेहत का ख्याल रखना पड़ता है, मैं एक गृहिणी थी, तो दिन भर घर परिवार को ही समर्पित कर देना मेरा जीवन था। अब समय बदल गया है। आज फिर मैं उसी बिंदु पर आकर रुक गई हूँ, जहां से मैं कुछ दिन पहले हेमा के साथ चली थी । सभी सही है । मुझे अपने में सुधार करने की जरूरत है। तभी घंटी बजी, देखा बेटे-बहू अपने दोनों बच्चों के साथ दरवाजे पर खड़े हुए हैं। दोनों पोते दौड़ते हुए आकर गले लग गए। मैं ज़िच के इस पार खड़ी क्या कहूँ?? यह सोचती रही। तभी बेटे ने कहा मां हम आपको अपने साथ ले जाने आए हैं, आपका घर, आपके पोते और हम दोनों, आपके बिना अधूरे हैं, हमारे साथ चलिए। आपका घर आपका इंतजार कर रहा है और मैं फिर सामान बांधने लगी।

मेरे हिस्से की धूप

तापसी रसोई में मटर की कचौरी बना कर जल्दी से तैयार होने लगी। आज शाम की चाय वह रूपा के साथ पीएगी। वह भी पूरे डेढ़ चम्मच चीनी डालकर। मन भर बातें होंगी। पांच साल बाद हम मिलेंगे और पूरे दस दिनों साथ रहेंगे। रूपा और तापसी स्कूल की मित्र है, कॉलेज भी साथ-साथ पढ़ी उसके बाद रूपा विदेश चली गई और तापसी ने चिरायु से शादी कर लिया। रूपा सामान रखते ही बोली बहुत थक गई हूँ यार,गरमा-गरम चाय हो जाए। चाय पीते हुए उसकी नजरें घर में कुछ ढूंढ रही थीं ऊपर, नीचे, दरवाजों की ओर, हर तरफ वो रह रह कर देख रही थी,आखिर उसने पूछ ही लिया। चिरायु कहां हैं? तापसी रो पड़ी । नहीं रूपा, अब यहां कोई नहीं रहता ।

रूपा-क्या ??

तापसी -बहुत गुमान था मुझे पत्नी होने का। बहुत ज्यादा अंधविश्वास किया मैंने चिरायु पर । जिस पीठ पर हमेशा सा शाबाशियां लेती थी, कभी सोचा नहीं था, धोखा भी उधर से ही आएगा। बस अपनी जिम्मेदारियां निभाने में इतनी व्यस्त रही कि अपने हिस्से की धूप भी ना ले सकी और कब मेरी जगह किसी और ने ले ली पता ही नहीं चला। कान के पास के बाल कब चांदी के तार में गुथ गए, आंखों के छोर हलकी झुर्रियों की झलक देने लगे पता ही नहीं चला। बस अपने काम में लगी रही और झुकती चली गई रिश्ते बचाने के लिए। शायद कभी चिरायु को मेरा प्यार खींच लाएगा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी और मैं चिरायु के लिए एक पायदान बन चुकी थी। घरवालों की मर्जी के खिलाफ चिरायु से शादी किया था मैंने। चिरायु इंसान थे मैं उन्हें देवता की तरह पूजा करती थी, बहुत बाद में पता चला कि मैं पत्थर पूज बैठी थी। चिरायु का व्यवहार काफी दिनों पहले ही बदलने लगा

था, लेकिन मुझे कभी यह आशंका ही नहीं हुई बहुत विश्वास करती थी मैं उन पर, लेकिन उन्हें कोई और साथी मिल गया था। धीरे-धीरे हमारे बीच दूरियां बढ़ती गईं । जिसने रिश्तो को रौंद दिया था। चिरायु आगे बढ़ गए और मैं वहीं खड़ी रह गई। मैं अभी उन यादों को छोड़ न सकी हूँ, अभी भी वह सुबह की अदरक वाली चाय, खाली पड़ा एश ट्रे, पारिजात वाले आंगन में दाना झुकते पक्षी,लगता है जैसे कल की ही बात है। अब तो चिरायु के कमरे में कोई हलचल भी नहीं होती ।न उन खुली खिड़कियों से चिड़ियों का आना जाना होता । ना दिन भर की चीं-चीं, चीं- चीं। वह लिखने वाली मेज़, वह कुर्सी पर रखा मफलर,यह सब देख कर अंदर से एक आवाज दस्तक देती है, जो खुशी नहीं डर पैदा करती है। कितना समझाया, लेकिन तब तक मेरी अमरबेल की तरह लिपटी प्रेम की पकड़ खत्म हो चुकी थी। वेद, कुरान, पोथी क्या पढ़ूं ? जो दुख के इस समंदर से पार लगा दे। कभी -कभी लगता है, जैसे मौत बिना दस्तक दिए दरवाजे से अंदर चली आए और मैं उसके साथ बिना पलटकर देखे साथ चल दूँ। चिरायु चले गए हमेशा के लिए । पुराने दिनों में घर में भी अजीब रिश्ता होता था ना रूपा!! दरवाजे भी आपस में गले मिलते थे, मेरी तरह अब तो घर का दरवाजा भी अकेला हो गया है।

रूपा-नहीं तापसी!! तुम एक पढ़ी-लिखी औरत हो, जीवन से हिम्मत मत हारो, यह जीवन अनमोल है, इसे पुरानी यादों में ज़ाया मत करो। जीवन में जो भी सामने आए उसे सामान्य रूप में लेते हुए जिंदगी का आनंद लो। तापसी-तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो रूपा!! मैं कल ही अपनी बंद पड़ी फैक्ट्री को फिर से चालू करूंगी और अपनी नई शुरुआत करूंगी। अपने हिस्से की धूप लूंगी।

मैडम और नारू

नारू गांव से शहर की ओर पलायन कर चुका था। गांव में गरीबी का मुंह देखा था, लेकिन सपने अमीरों के पाल रखे थे। जिंदगी आसान होनी चाहिए, कोई ऐसा उपाय हाथ लग जाए कि मैं अमीर बन जाऊं। बड़ा नाम हो। बस नारु को तलाश थी उस रास्तेकी जो उसे पैसों की चकाचौंध तक पहुंचाए। सहसा एक परिचित की आवाज सुनाई दी-नारू! देखा तो बाबू!! जिससे अभी कुछ ही वक्त हुए पहचान हुए। कैसे हो? बड़े दिन हो गए देखे। सब ठीक-ठाक तो है ।

नारू -हां! बस किसी अच्छी नौकरी की तलाश में हूँ ।

बाबू -एक बात कहूँ? शादी का विचार है क्या? नारू- पहले काम तो मिल जाए, परिवार कैसे पालूंगा।

बाबू-काम भी और दाम भी ।ऐसी गोटी लाया हूँ कि एक झटके में जिंदगी का दांव पलट जाएगा। नारू- क्या कोई नौकरी है?

बाबू -छोकरी है वह भी मॉडर्न खयालात वाली। बिल्कुल तुमको जैसी चाहिए अमीर भी। बोलो तो बात बना दूंगा। थोड़ा एडजस्ट करना पड़ेगा। नारू- मतलब????

बाबू-कल शाम तिराहा चौक पर आ जाओ ,फिर पैसे वाली पार्टी है रिश्ते में कुछ चीजों को नजरअंदाज करना पड़ता है ।एक न एक कमी तो हर रिश्ते में रहती है ।

नारू-ठीक है।

दूसरे दिन चौक पर नारू बाबू का रास्ता देखते हुए अब तक तीन सिगरेट फूंक चूका था ।

ठेलेवाला-क्या बात है भैया? किसी की राह देख रहे हैं। कौन है वह?

नारू -हां भाई।

ठेलेवाला-बताइये ! मैं यहां आसपास रहने वाले लगभग सभी लोगों की जानकारी रखता हूँ साहब। बोलिए क्या नाम है ?

नारू- बाबू नाम है। ठेलेवाला -अच्छा वह लफंग, वह आपको कहां मिला? ठीक आदमी नहीं है, साहब दूर ही रहिएगा। इधर नारू तीन दिन से बुखार

में बिस्तर से उठ नहीं पाया। ऊपर से पीठ पर हुए फोड़े से रह-रहकर होने वाले दर्द से उसकी जान निकल जाती। अगर उस दिन समय पर वह वैद्य उसे देखने ना आता। दवा की पुड़िया देकर वैद्य चले गए। जल्दी में उन्हें पैसे भी नहीं दे पाया। तबीयत में जैसे ही थोड़ा सुधार हुआ बस पैसे लेकर वैद्य जी के घर पहुंच गया। बाहर से ही वैद्य जी की शान शौकत देखते ही नारू की आंखें खुली रह गई, वाह! क्या ठाट है? गाड़ियां, नौकर-चाकर। वैद्य जी की कमाई भी अच्छी होगी, कि वैद्य जी आते दिखे। नमस्कार!! वैद्य जी मैं आपकी फीस लेकर आया था।

वैद्य जी- नहीं बेटा, फीस मत दो, तुम तो हमारे गांव के ही हो, बस समय मिले तो आते रहा करो, कोई जरूरत पड़े तो मुझसे कहना, अपना समझना, झिझकना नहीं।

नारू-ऐसी बात है तो छोटा मुंह बड़ी बात ।एक अदद नौकरी की दरकार है वैध जी।

वैध जी-ठीक है! मैं उसकी व्यवस्था कर दूंगा। लेकिन ईश्वर की सौगंध एक बात है जो तुम अपने तक रखना। मेरी भी छोटी सी मदद करो। मेरी लड़की है जरा मॉडर्न खयालात की है, चौथा महीना चल रहा है, लोकलाज से छिपा कर बैठा हूँ। तुम्हारी नजर में कोई पच्चीस- छब्बीस वर्ष का कोई लड़का नजर में हो तो बताना।

नारू -अच्छा वैद्य जी, अब मैं चलता हूँ, फिर आऊंगा ,..

रात भर बड़ी बेचैनी से नारू करवटें बदलते वही सोचता रहा। आंखों ही आंखों में उसने रात गुजार दी। कब सूरज निकला, पता ही न चला और फिर वही ख्याल। नौकरी तो मिल नहीं रही है, शादी क्या खाक होगी? आज देखता हूँ, शायद किस्मत साथ दे दे । बस जल्दी से नहा -धोकर तैयार हो होकर घर से निकलते ही पीपल के पेड़ के पास रास्ते पर वैद्य जी दिख गए।

ना चाहते हुए भी नारू उनके साथ चल पड़ा। बस बताने लगा बड़ी गरीबी है गांव में, खेती-बाड़ी सब नदी में डूब गई है ,वापस जाने का तो सवाल ही नहीं उठता और यहां नौकरी कहीं मिल नहीं पा रही है। जिंदगी बड़ी कठिन चल रही है ।

वैद्य जी -वैसे तुम्हारी उम्र कितनी है नारू?

नारू-प प पच्चीस वर्ष। वैद्य जी- तुम मेरी कही हुई बात पर एक बार विचार कर लो, इच्छा हो तो लड़की से बात कर लो, नौकरी, ज़मीन, पैसा जो मांग लो तुम्हारी मर्जी का ।

सौदा फायदे का ही लग रहा था। बस नारू ने हां कर दी। आनन-फानन में सब निपट गया। लड़की तो कुछ खास नहीं मिली, लेकिन हां पैसा भरपूर मिला, नारू खुश था, आखिर उसकी लॉटरी लग ही गई, कोई बात नहीं लड़की कम सुंदर है तो। दुधारू गाय की तो लात भी भली। बस फिर क्या था, दिनभर सेवा में लगा रहता, बीच-बीच में थोड़ा असहज भी हो जाता। फिर हिम्मत करके कहता मैडम, आप बैठिए ।मैं पानी लेकर आता हूँ। कुर्सी आगे बढ़ाने की आदत बना ली ।सुबह से रात तक जी हजूरी में ही लगा रहता ।इसी बीच मैडम को एक अच्छी नौकरी भी मिल गई । अब तो दसो उंगली घी में और सर कढ़ाई में ।जैसे राजसी ठाट। कुछ महीने हुए एक अचानक बाजार में बाबू आता हुआ दिख पड़ा, बस देखते ही मुस्कुरा पड़ा बोला आखिर आपने मुर्गी दबोच ही ली, आप तो बड़े होशियार निकले।

नारू-तुम कहां गायब हो गए थे उस दिन? और उसके बाद जो सुना उससे तो जैसे सांप सूंघ गया, मेरा बच्चा कैसा है? कभी घर पर आता हूँ। घबराहट में शरीर पसीने से तरबतर हो गया। भागता हुआ वैद्य जी के घर पहुंचा, सारी बातें बताइए,..।

वैद्य जी ने कहा तुम्हें तो पहले से सब जानकारी थी। लेकिन हां! अब एक काम जरूर करो कि आज रात बाबू का खेल खत्म कर समय के लिए शहर से दूर चले जाना है वरना यह मुसीबत कभी पीछा नहीं छोड़ेगी। बस दूसरे दिन वैद्य जी शहर छोड़ कर भाग गए। नारू अब खुश था कोई सबूत नहीं बचा था।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - प्रीति हर्ष
जन्म - 05 जनवरी 1970, नारीपुर (उत्तर प्रदेश)
शिक्षा - एम.ए. (इतिहास), एन.डी.डी.वाई. (डिप्लोमा)
पुत्र - हर्ष, अनिरुध्द, मैत्रेय
मो. -8459636721
विधा - लघुकथा, कहानी, संस्मरण, व्यंग्य, आलेख, समीक्षा
कार्यक्षेत्र - समाज सेवा, नरेश लोक सेवा समिति 2005 तक, लेखन, चित्रकला, नुतन कला संगम (वाटर कलर, तेल चित्र, पेंसिल स्केच प्रदर्शनी),
सम्मान - महिला सशक्तिकरण पोस्टर प्रतिस्पर्धा - विजेता
ध्येय - अनुभूति, संवेदना और कल्पना के सहारे हिन्दी पाठकों को बेहतर रचना देने का प्रयत्न।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-88102-80-3
मूल्य- 55/-